माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान (BSER) कक्षा 12वीं के हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के अंतर्गत **'अलंकार'** विषय के विस्तृत नोट्स नीचे दिए गए हैं।

---

## अलंकार परिचय (Introduction to Figures of Speech)

**परिभाषा:** 'अलंकार' का अर्थ है–आभूषण। जिस प्रकार आभूषण नारी के सौंदर्य को बढ़ाते हैं, उसी प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों या धर्मों को 'अलंकार' कहते हैं।

---

### 1. अनुप्रास अलंकार (Alliteration)

जहाँ काव्य में एक ही वर्ण की आवृत्ति (दोहराव) बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "तरणि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"
- **व्याख्या:** यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है।

### 2. यमक अलंकार (Pun)

जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आए, लेकिन हर बार उसका **अर्थ अलग** हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।"
- **व्याख्या:** यहाँ पहले 'कनक' का अर्थ 'धतूरा' है और दूसरे 'कनक' का अर्थ 'सोना' (स्वर्ण) है।

### 3. श्लेष अलंकार

जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो, लेकिन उसके **अर्थ एक से अधिक** निकलें (चिपके हुए हों), वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।"
- **व्याख्या:** यहाँ 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं–मोती के लिए 'चमक', मनुष्य के लिए 'इज्जत' और आटे (चून) के लिए 'जल'।

**4. वक्रोक्ति अलंकार**

जहाँ वक्ता (बोलने वाला) द्वारा कहे गए शब्द का श्रोता (सुनने वाला) जानबूझकर कोई दूसरा या **टेढ़ा अर्थ** निकाले, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "को तुम? -इत आए कहाँ? घनश्याम हम। -तो कितहूँ बरसो।"
- **व्याख्या:** यहाँ श्री कृष्ण स्वयं को 'घनश्याम' (नाम) कहते हैं, लेकिन राधा जी उसका अर्थ 'काले बादल' निकालकर कहती हैं कि तो कहीं जाकर बरसो।

---

**5. विरोधाभास अलंकार**

जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी केवल शब्दों के माध्यम से **विरोध का आभास** हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "या अनुरागी चित्त की, गति समुझे नहिं कोइ। ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ।"
- **व्याख्या:** यहाँ काले रंग (श्याम रंग) में डूबने पर उज्ज्वल (सफ़ेद) होने की बात कही गई है, जो सुनने में विरोधी लगती है, लेकिन इसका वास्तविक अर्थ कृष्ण की भक्ति है।

**6. अतिशयोक्ति अलंकार**

जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन बहुत अधिक **बढ़ा-चढ़ाकर** किया जाए कि वह लोक-सीमा से बाहर लगे, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "हनुमान की पूँछ में लगन न पायी आग। लंका सगरी जरि गई, गए निसाचर भाग।"
- **व्याख्या:** यहाँ आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलने का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है।

**7. विभावना अलंकार**

जहाँ **कारण के बिना ही कार्य** का होना पाया जाए (यानी साधन नहीं है फिर भी काम हो रहा है), वहाँ विभावना अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "बिनु पद चले, सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना।"

- **व्याख्या:** यहाँ बिना पैरों के चलना और बिना कानों के सुनने का वर्णन है।

---

**8. संदेह अलंकार**

जहाँ किसी वस्तु को देखकर अत्यधिक समानता के कारण यह **निश्चित न हो पाए** कि वह वस्तु वही है या कुछ और (अंत तक संशय बना रहे), वहाँ संदेह अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "सारी विच नारी है कि नारी विच सारी है। सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।"
- **व्याख्या:** यहाँ चीर-हरण के समय द्रौपदी और साड़ी के बीच का संदेह अंत तक बना रहता है।

**9. भ्रान्तिमान अलंकार**

जहाँ सादृश्य (समानता) के कारण एक वस्तु को **भूल से (गलती से) दूसरी वस्तु मान लिया जाए** और उसी के अनुसार क्रिया कर दी जाए, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

- **उदाहरण:** "नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।"
- **व्याख्या:** यहाँ तोते ने नाक के मोती को अनार का दाना (बीज दाड़िम) समझ लिया और उसे पकड़ने की कोशिश की।

---

**परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण सुझाव:**

1. **यमक और श्लेष में अंतर:** यमक में शब्द बार-बार आता है, श्लेष में शब्द एक ही बार आता है पर अर्थ कई होते हैं।
2. **संदेह और भ्रान्तिमान में अंतर:** संदेह में "यह है या वह" की दुविधा बनी रहती है, जबकि भ्रान्तिमान में व्यक्ति गलत वस्तु को सच मानकर काम कर बैठता है।